



नैरोबी मक्खी का आतंक तथा बचाव

सुदीपा कुमारी झा*, मो. मोनोबल्लाह**, अंजनी कुमार*** और केशव****

नैरोबी मक्खी एक मित्र कीट है। यह न तो काटती है और न ही डंक मारती है। शरीर के किसी भी अंग पर इसके बैठने पर खुजलाहट, जलन तथा घाव हो जाता है। कभी-कभी तो आंखों की रोशनी भी चली जाती है। ऐसा पेडेरिन नामक पदार्थ के स्राव से होता है। जब भी नैरोबी मक्खी शरीर पर बैठे तो बिना स्पर्श किये उड़ा देना चाहिए और आंख को छूने से बचना चाहिए।

जून में जब सिक्किम मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मझीतारी के 100 से अधिक छात्र नैरोबी मक्खी की चपेट में आ गए, तब से यह लगातार चर्चा का विषय बना हुआ है। सिक्किम के बाद इसका प्रकोप बंगाल में पाया गया। इसके बाद बिहार सरकार ने गंभीरता को देखते हुए बिहार में रेड अलर्ट की घोषणा कर दी। वास्तव में, नैरोबी मक्खी, मक्खी नहीं है। यह एक भृंग (बीटल) है। यह कोलियोप्टेरा गण (ओडर) के स्टेफिलिनिडे कुटुम्ब (फैमली) से संबंधित है। स्टेफिलिनिडे परिवार के सदस्य को रोव बीटल भी कहा जाता है। स्टेफिलिनिडे की पहचान मुख्य रूप से उसके छोटे एलीट्रा (आगे के पंख) द्वारा होती है, जो आमतौर पर उनके पेट के आधे से अधिक खंडों को उजागर करते हैं। वंश (जीनस) पेडेरस की दो प्रजातियों (पी. एक्जिमियस तथा पी. सबियस) को नैरोबी मक्खी कहा जाता है। नैरोबी एक पूर्वी अफ्रीकी देश केन्या की राजधानी है। यह कीट पूर्वी अफ्रीका में मूल रूप से पाया जाता है और वहां इसका भयंकर प्रकोप देखा गया। इसलिए इसे नैरोबी मक्खी या केन्या मक्खी के नाम से पुकारा जाता है।

*एस.आर.एफ. एवं **निदेशक, भाकृअनुप-अटारी, पटना; **प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना; ****प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप, केएबी-1, पूसा, नई दिल्ली-110012

यह केवल केन्या तक ही सीमित नहीं है, यह पूरे विश्व में उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण क्षेत्र में भी पायी जाती है।

परिचय

भृंग लगभग एक सें.मी. लंबा होता है। कीट का सिर, पेट का पिछला भाग और एलीट्रा काले रंग का होता है तथा गर्दन और पेट का शेष भाग नारंगी रंग का होता है। यह नमी वाले स्थान जैसे-धान के खेत में पाया जाता है तथा भृंग रात में प्रकाश की ओर आकर्षित होता है।

कीट द्वारा होने वाले नुकसान

ग्रब और वयस्क दोनों ही फसलों के कीटों के शिकारी होते हैं और मानव के लिए मित्र कीट। कभी-कभी यह मानव को शारीरिक रूप से नुकसान भी पहुंचाता है। सामान्यतः सिंचित मृदा में काम करने वाले किसान इसकी चपेट में आते हैं, लेकिन कभी-कभी भृंग विभिन्न कारणों से आवासीय क्षेत्रों की ओर पलायन करते हैं, जैसे घर के अंदर से आने वाली रोशनी, कटी हुई फसल के साथ। कीटनाशकों के उपयोग से फसल में कीटों की कमी हो जाती है, परिणामस्वरूप उपलब्ध शिकार (फसल के कीट) की मात्रा कम हो जाती है और आहार की तलाश में भृंग आवासीय क्षेत्र में आ जाता है। मादा कीट नमी वाले स्थान में एक-एक करके अंडे देती है। भारी बारिश के बाद कीटों की संख्या में वृद्धि होती है। इसके साथ ही इसका प्रकोप

निवारण के उपाय

- मक्खियों को बिना स्पर्श किये उड़ा देना चाहिए।
- शरीर के जिस हिस्से में ये मक्खियां बैठती हैं, उसे साबुन और पानी से अच्छी तरह धोना चाहिए।
- सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करना चाहिए।
- ऐसा कपड़ा पहनें, जिससे पूरा शरीर ढका रहे।
- चश्मा पहनें और आंख को छूने से बचें।
- रात में रोशनी से बचें।
- नैरोबी मक्खी के प्रजनन स्थलों पर इमिडाक्लोप्रिड, फिप्रोनिल, डेल्टामेथ्रिन जैसे कीटनाशकों का छिड़काव कर सकते हैं।
- प्रकाश स्रोत के माध्यम से भृंग का बड़े पैमाने पर संग्रह करके कीटनाशक की सहायता से नष्ट कर सकते हैं।
- गंभीर चकते होने पर डॉक्टर से सलाह लें।

बढ़ जाता है। नैरोबी मक्खियां न तो काटती हैं और न ही डंक मारती हैं। शरीर पर बैठने पर यह एक अम्लीय पदार्थ पेडेरिन का स्राव करती हैं। पेडेरिन का निर्माण कीटों के शरीर के अंदर पाए जाने वाले सहजीवी बैक्टीरिया द्वारा होता है। इस पदार्थ के कारण असामान्य जलन, जल्द ही सूजन या त्वचा पर घाव हो जाता है। सूजन की गंभीरता प्रत्येक व्यक्ति, पेडेरिन की खुराक और संपर्क की अवधि पर निर्भर करती है। कम गंभीर मामलों में त्वचा में हल्की लालिमा होती है। मध्यम रूप से गंभीर मामलों में खुजली लगभग 24 घंटों के बाद शुरू होती है। लगभग 48 घंटों में छाले विकसित हो जाते हैं, जो आमतौर पर सूख जाते हैं और निशान नहीं छोड़ते। यदि विष अधिक व्यापक रूप से शरीर में फैल गया हो, तब अधिक गंभीर मामले हो सकते हैं। इसके कारण बुखार, तंत्रिका में दर्द, जोड़ों में दर्द या उल्टी हो सकती है। यदि विष व्यक्ति की आंखों के संपर्क में आता है, तो यह नेत्र श्लेष्मला (आंख आना) और अस्थायी अंधापन का कारण बन सकता है। कुछ लोगों में घाव इतना गहरा हो जाता है कि डॉक्टर को सर्जरी करने की जरूरत पड़ती है।